# ईसाई मत मर्दन।

दोहा–ईसा को ईश्वर कहैं ईसाई अज्ञान।
सब पापिन को पाप ले ईसा दीनों प्रान॥

## लावनी रंगत खड़ी इंजील खण्डन।

देखी सब इञ्जील खूबसी पोल नज़र में आई है।
कोई न पड़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है॥टे०॥
मत्ती रचित इञ्जील बाब दुसरेमें ये लिक्खा है कलाम।
मुल्क यहूदाके भीतर एक बना है देखो बैतुल हाम।
वहां एक रहता था यहूदी इस्म था उसका को इबराम।
थी उसके एक लड़की देखो लड़कीका था मरियमनाम॥
शेर–था वहीं यूसुफ वो बढ़ई नज़र लड़की पर पड़ी।
चाह उस लड़की की पैदा हो गई दिल में बड़ी॥
अदा उस के हुस्न की यूसुफ के दिल में आगड़ी।
ब्याह इसके संग करूं ये फिक्र करता हर घड़ी॥
शादी मरियम की यूसुफ सङ्ग हुई खबर ये पाई है।
कोई न पड़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है॥१॥

हमल पेशतर से वो रहगया जबके मरियम थी क्वांरी।
फिर आई यूसुफ के घरमें सुनो हकीकत अब सारी॥
जो देखा यूसुफ ने हमल से लगा फिकर करने भारी।
अगर छोड़ दूं मैं इस को तौ होवेगी बहुती ख़्वारी॥
शेर—फिर बढ़ाई बात ये रूहउलक़ुदुस् का है फ़ज़ल।
पाक रू से रहगया मरियम के क़ायम वो हमल॥
हमल जिसको रहगया तासीर से कर के दख़ल।
पाक कैसे हम कहें उस रूह को देखो असल॥
विना मर्द संग सोये औरत कहां से लड़का लाई है।
कोई न पढ़ना०॥ २॥

हमल को ले मरियम घर आई जब यूसुफ का खुला भरम।
हुआ बहुत अफसोस वो यूसुफ को पैदा हुआ रंजोअलम॥
फिर आई तदबीर नज़र एक यूसुफ ने की तजके ग़म।
लगा करन मशहूर सबोंसे यूसुफ खा करके वो क़सम॥
शेर—आज की शब वो फ़िरश्ते ने ख़ुदा के आन के।
पाक जोरू है तेरी मुझ से कहा पहिचान के॥
तू उसे घर में बुला ले बात मेरी मान के।
कुछ असर इसमें नहीं रह साथ ऐसी शान के॥

करामात से जनेगी अथवा कुदरत देख खुदाई है।
कोई न करना ॥ ३ ॥

बिना तुख्म कोई दरख्त भी होता है मजबूत नहीं।
इसी तरह से औरत लड़का जन सकती बे मूत नहीं ॥
बिना मूत पैदा देखो बस हुआ कोई जिन भूत नहीं।
तुम कहते बेमूत हुआ ईसा ये कोई साबूत नहीं ॥
शेर—है लिखा वैद्यकमें भी बिन बीज नाहिं होता शजर।
और हिकमत में लिखा है देख लो करके नजर।
और देखो डाक्टरी में है लिखा ये ही जिकर।
बिना सोहबत मर्दकी औरत जने कैसे पिसर ॥
साल से कहुओं का देखो ऐसी गप्प उड़ाई है।
कोई न करना० ॥ ४ ॥

फिर यूसुफ मरियम को लाया घरमें अपने बुला शिताब।
लाय फेर मूछों पर अपनी दिया रकीबोंको ये जवाब ॥
भूले हो किस भरममें तुम सब होगे इन बातोंमें खराब।
हमल रहगया मरियमके जो बिना तुख्म कुदरते जनाब ॥
शेर—हो यकीं इनको गया सुनकर फिरिश्तेकी जबान।
जनेगी बच्चा करामाती ये मरियम नौ जवान ॥

उसी पर फिरते हैं दीवाने येही वो लाकर इमान।
अक़लको खो करके अपनी झूंठ करते हैं बयान॥
हैं झूंठे ये सुनो बनावट की सब बात बनाई है।
कोई न पड़ना० ॥ ५ ॥

है ये बनावट ईसा को बस खुदा ये करके गाते हैं।
और वारिश भी खुदा का देखो ईसा को बतलाते हैं॥
खुदा उसे खुद कहैं और उसका बाप खुदा समझाते हैं।
मगर नहीं परदादा उस का ये बातें फ़रमाते हैं॥
शेर—हैं नहीं चलते ये सीधी राह सच्ची आन के।
मानते ना हुक्म उस का शिष्य ये शैतान के॥
मानते ईसा को वेटा ये खुदा का मान के।
कब खुदा सोया था मरियमके कहो संग आनके॥
कौन से सनमें कहो खुदा की मरियम बनी लुगाई है।
कोई न पड़ना फन्दमें इनके जाली मत ईसाई है ॥६॥

खुदाको वाहिद सब कहते हैं नहिं उसके दादा न पिदर।
नहीं चचा न भाई कोई नहीं खुदा के है वो मदर॥
नहिं वेटी नहिं वेटा उस के ना जोरू ना विरादर।
फिर वेटा किस तरह खुदाके हुआ कहो यह कौनसा घर॥

शेर—यों तो बेटा सुन खुदा का सब सकल संसार है।
है पिता वो जगत् का सब का करे उपकार है॥
तुम कहो लड़का हुआ तो झूंठ ये गुफ़्तार है।
है न कोई तस्वीर उस की औ न कोई आकार है॥
बे नज़ीर है खुदा न उस की नज़ीर कोई पाई है।
कोई न पढ़ना० ॥ ७ ॥
फ़रक़ है इन अन्धोंकी अक़्ल में कियेको अपने पावेंगे।
कुफ़र बोलते हैं ये जबां से नरक में डाले जावेंगे॥
पकड़ फ़रिश्ते बांधके इन को दोज़ख़ में ले जावेंगे।
छुरी कटारी सर पर इन के वो पत्थर बरसावेंगे॥
शेर—है मत्ती इञ्जील दुसरे बाब में देखो ज़रा।
जब हुआ ईसा जवां शैतान के क़ब्ज़े करा॥
फिर सहे सदमें हज़ारों और देखो दुख भरा।
बस मिला पानी नहीं औ भूख के मारे मरा॥
मिली न रोटी ईसा को और दारुण विपत उठाई है।
कोई न पढ़ना० ॥ ८ ॥
बड़ी हंसी आती है सुनकर ईसाई औ सुनो जनाब।
मरे खुदा होकरके भूखा औ ना मिले पीनेको आब॥

कैसा है वो खुदा जो खुद मौताज बना रहता बेताब।
मदद औरकी कब कर सकता इसका दीजे हमें जवाब।
शेर—है बड़ा अफसोस सुनके और है हैरत कमाल।
पादरी जितने हैं देखो है मेरा उन से सवाल॥
जो करामाती था ईसा क्यों मरा कीजे ख्याल।
क्रूस पर खींचा गया क्यों हाल वो करके बेहाल॥
एली एली क्यों चिल्लाया झेली बिपत सवाई है।
कोइ न पड़ना० ॥ ९ ॥
और हाल आगे सुन लीजे कान लगा ईसा का यार।
करी बसर जिसतरहसे अपनी सम्पूरण सुनिये विस्तार॥
कहींपै गाली कहींपे देखो पड़ी खूब घूसों की मार॥
कही चपत ईसा के सर पर जड़ी किसीने बेशुम्मार॥
शेर—गये निकाले शहरसे कहीं करके वो खूबी जो ख़ार।
और कहिं कोड़े पड़े तन पर हुये वो बेक़रार॥
बस बजी ताली कहीं औ हंस रहे नर और नार।
और कहीं खरपर किया ईसाको वो देखो सवार॥
कहूं कहा तक जो जो ख़ारी ईसा ने करवाई है।
कोई न पड़ना॥ १०॥

अबजतरैका खुदाहै इनका अजबहै जिसकी शौकतशान।
ऐसे खुदापर फ़ख़र ये रखते दर २ करते फिरें बयान॥
ये कहते हैं पाप हमारे जितने थ सबकी कर हान॥
सजा मसीने उठाई इनकी जरा हिलादे नहीं जबान॥
और—जब कि वो शैतान दुश्मन बस हमारा हो गया।
तो गुनाहों से भरा आलम वो सारा हो गया॥

फिर खुदा के रहम का सब पर नजारा होगया।
और आलम में पिसर भेजा वो प्यारा होगया॥
शिकममें रह नौ मास गिज़ा नापाक जो उसने खाई है।
कोई न बहना॥ ११॥

बाहर निकला शिकमसे ईसा लगा वो करनेको तूफान।
अदल खुदा का किया वो पूरा आप देखो कुर्बान॥
है कैसा इन्साफ काहो ईसाई क्यों बनते नादान।
सरासरी वे अकली है ये सोच लो लीजें धरके ध्यान॥
और—गुनः तो कोई करे बस पादरी जी सरबसर।
उस गुनःकी सजा पावे पिसर खालिक का सुकर॥
है लिखा कानून में बस जो करे जैसा बशर।
है सजा मिलती उसी को औ न दुसरे को मगर

करे कोई और पावे कोई ये अन्धेर सवाई है ।
कोई न पढ़ना० ॥ १२ ॥
देखो ये अन्धेर भाइयो चोरी करे कोई इन्सान ।
उसकी सजा में देखो यारो खुदा मरे दे अपनी जान ॥
ऐसा अहमक खुदा है इनको जरा तो अब कीजे पहिचान ।
जानका अपनी खुद दुशमन वो कैसे लावे कोई ईमान ॥
शेर—अकल पर परदा पड़ा है वे अकल हैं वे अकल ।
है अदालत में वो जिसकी देख ले ऐसा अदल ॥
देखिये अब ये हिकायत बस जरा कीजे नजर ।
है फरेबी मक्र जिसमें वह भरा बिलकुल वो छल ॥
खुदा के ये ओरू बतलाते मत इनकी चौराई है ।
कोई न पढ़ना० ॥ १३ ॥
सिवाय इसके सुनिये साहब और भी बहुतेरे हैं मुकाम ।
जहां लिख रक्खे कलाम ऐसे झूंठनहीं कहताहूं मुदाम॥
और लूत एक नौजवान था बात ये हैगी जाहिरआम ।
बहुत मेहरथी खुदाकी उसपर दोवेटी थीं उसकेयाम ॥
शेर—लूत जो करता इबादत था सवेरे और शाम ।
जब हुई गालिबओ सोहबत चिर चढ़ा जाकरके काम॥

पीके फिर देखो बरंडी औ शरावों के वो जाम ।
फिर लगे करने वो अपनी बेटियों सेती हराम ॥
अजब मुक़द्दस किताब इनकी छलसे भरी भराई है ।
कोई न पढ़ना० ॥ १४ ॥
औरहाल उस घरका सुनलो जिसमें मसीहकाथा औतार।
किताब दुसरी सलातीनकी बाब ये तिसरेमें इजहार॥
पुरखों में हज़रत के ये दाऊद शाह बहुती हुश्यार ।
पिसर एक एमन था उनका जवांका था देखो लरोर ॥
शैर—बस वो एमन के हती हमशीर एक रश्के कमर ।
थी परी पैकर की सूरत पड़ी भाई की नज़र ॥
बहिन पर भाई हुआ आशिक ये पाई है ख़बर ।
हाथसे उसको पकड़ली पायके सूना वो घर ॥
कुदृष्टि देखे बहिन को भाई जरा शरम नहिं आई है ।
कोई न पढ़ना० ॥ १५ ॥
और बापकी उसके हकीकत सुनो भाइयो कान लगाय।
जब आया ज्वानीका आलम घेरलिया फिर इश्कने आय॥
एकदिन करने सैर वो हजरत शहरके अन्दर निकलेजाय।
लगे देखने इधर उधर को बेताबी से आंख लड़ाय ॥

शेर—बहुत थे बेताब हज़रत निगह जा छत पर पड़ी।
एक परी पैकर से देखो नज़र हज़रत की लड़ी॥
थी वज़ीर उनकेकी औरत जो थी कोठे पर खड़ी।
देख कर होगये आशिक दिलोजां से उस घड़ी॥
काम ये खोटे करें पयम्बर बनके धूल उड़ाई है।
कोई न पढ़ना० ॥ १६ ॥

फिर हज़रत करके मन्सूबा वज़ीर को बुलवा उसदम।
करके बहाना जंगका उसको किया रवाने देके हुक्म॥
था वो बेगुनः वज़ीर उसका करवा डाला सीस कलम।
औरत उसी को घरलाये देके हज़रत उसको दम॥
शेर—करथियोंका बाब पंजुम बीस आयतमें ये जाल।
देख लीजे है लिखा बस दूर कर दिलका मलाल॥
एक पिन्हा जोड़ा शहाना औ गले मोतीकी माल।
बस बना जोरू उसे हज़रतने ली घरमें बो डाल॥
ऐसी हरकत कर बेजा फिर दिखलाते सचाई हैं।
कोई न पढ़ना० ॥ १७ ॥

सुनो उन मसीहोंका हालजो मुल्ककर मिथ्यामेंथेमरहंग।
इसां के उनके देखो यारो सुनो सुनाता हूं मैं ढंग॥

शरम मुझे कहते आती है हाल यहां पर है ये ढंग।
शरज बहुत सी ऐसी शेखियां हैं इनकी ये हैं मतभंग॥
शेर—देख लो मजमूं मुकद्दस है रिसालों का भरा।
जिक्र इनकी पुस्तकों में बस रिसालों का भरा॥
हाल मैनोशी का है सब ढंग वालों का भरा।
हैं जो ऊपर से वो गोरे दिलके कालों का भरा॥
जिक्र दोगलों का किताब में हक की कहें बनाई है।
कोई न पहुना० ॥ १८ ॥
शिकेमेनट एक ईसाइयों का देखो यारो है त्योहार।
सब से बुरा ईसाई उसमें करते हैं देखो व्योहार॥
अव्वल तो ईसा का ये खाते हैं मास खुश होकरयार।
फिर पी लेते खून को उस के ईसाई ऐसे मक्कार॥
शेर—गौर कीजे भाइयो अब इनके देखो प्यार को।
मांस ईसा का ये खाते मास में दो बार को॥
बस कहीं होता है ऐसा देख लो संसार को।
मार के खा जायें अपने गुरू और मुख्त्यार को॥
भंग भई मत ऐसी इन की कैसी चाल चलाई है।
कोई न पहुना० ॥ १९ ॥

क्या वो पक्ड़ा खाने को बाकी कब्र तक खाये जावेंगे।
कितना बड़ा कद था ईसा का ईसाई बतलावेंगे॥
कितना लम्बा चौड़ा है नापेंगे पता लगावेंगे।
मांस खाये ईसा का ये हड्डी पर दांत जमावेंगे॥
शेर॥ जो कोई पूछे तो कहते कुछ न जिस्मानी है ये।
है जो ये खाना हमारा फकत रूहानी है ये॥
बस यही अफसोस है निकले सुनो बानी है ये।
रूह कुत्ते की है इन की हमने पहिचानी है ये॥
नहीं ये करना रवां हैतुमको नसिहत यही सिखाई है।
कोई न पकड़ना० ॥ २० ॥

तुम जो ईसा के ताईं यारो देखो खा जाओगे।
फिर वो सिफारिशकीखातिर कहो किसके ताईं लावोगे॥
कौन दिलावेगा नजात अब किस को पेश कराओगे।
गुनः वो अपने फिर देखो किसके सिर पर लदवाओगे॥
शेर॥ छोड़ दो ईसाइयो सब बस ये क्या दस्तूर है।
कुफ्र ये एक किसम का बस सरासर भरपूर है॥
है जो गिरजा घर अखाड़ा इन्द्र का मशहूर है।
अब वो खाने खुदा हो बैठी जहां पर हूर है॥

कहीं जड़ी तसवीर कहीं पर कुरसी मेज बिछाई है।
कोई न पड़ना० ॥ २१ ॥

कहीं पलेट रक्खे हैं देखो कहीं रक्खे चम्मच नायाब।
कहीं लवेंण्डरकी शीशी वो पड़ी हुई नहिं फूट जनाब ॥
कहीं पै मोढ़े कहींपे कुरसी और कहीं रक्खा असबाब।
कहीं पे रम रक्खी है देखो कहीं बरन्डी रखी शराब ॥
शेर—हैं वो गुलदस्ते रखे और कुमकुमे भी मेज पर।
लग रहे फानूस हांडी बस कहीं वो दर ब दर ॥
कारचोबी का कहीं कालीन वो उमदा सुघर।
सब तरह की खूबियां आती नजर देखो जिधर ॥
जो गाती हैं गजल होलियां लेडी ला बैठाई है।
कोई न पड़ना० ॥ २२ ॥

अगर पादरी खुशमिजाजहो लगे वो बाजे बजन बिगल।
लगीं लेडियां गाने देखो सिंध भैरवी और गजल ॥
राग रंगका समां बांध नखरे दिखलातीं मचल मचल।
बाबू जितने बाके खुशामद विठलाते हैं बढल बढल॥
शेर—बस ये करती इस गरज़ से हैं तमाशे जो दे यथ।

फंस वो जावें जालमें कोई वो आकर किसी ढब ॥

बावुओं का हाल सुनिये भाइयो कहता हूं अब ।

तेली तमोली गड़रिये बाबू बने वो बदुल ढल ॥

तनख़ाहों के लालच में इन लज्जा धरम गंवाई है ।

कोई न पहुना० ॥ २३ ॥

असल महनताने में जो कोई होते थे दीन इसलाम ।

जब तक जीवें रोटी कपड़ा और मिलते खरचनलो दाम॥

अब जो ईसाई होते हैं खाने को नाहिं मिलता ताम ।

फिरें दरबदर मारे २ भीख मांगते सुबा और शाम ॥

घर-भीख भी मिलती नहीं बस वो गये सब कार से ।

है फटी पतलून पहने फिर रहे लाचार से ॥

छूट जो सब से गये भाई कुटुम्ब परिवार से ।

हो गये बिलकुल अलग देखो सभी घर द्वार से ॥

चमार कोरी और किरानी बना वो भंगी नाई है ।

कोई न पहुना० ॥ २४ ॥

अब अस्तुति करता हूं उसकी परब्रह्म जो है करतार ।

शीश झुकाता हूं मैं उसको नमस्कार कर बारम्बार ॥

है वो सबका पालन करता और बख़्शा वोही मुख़्त्यार ।

दोस्त और दुश्मनका भी पलमें करदेता है निस्तार ॥

शेर—चांद सूरज को उसी ने है किया रौशन बड़ा ।

औ सितारों से जगमग है आसमां देखो जड़ा ॥

की मुनव्वर उसी गुल से चर्खे नीली खड़ा ।

है वो आदिल और मुन्सिफ़ मुन्सिफ़ है उसका बड़ा ॥

उसके न्यायकी चाल किसीसे हिलती नहीं हिलाई है ।

कोई न पहुना० ॥ २५ ॥

दयाको करके वेद प्रगट किये चार भागमें चार हैं वो ।

भेद गुप्त वेदों ने खोला सब के ज्ञान आधार हैं वो ॥

रंक राव सुल्तान हैं उसके करते जान निसार हैं वो ।

पीर पयम्बर सारे औलिया उस के तावेदार हैं वो ॥

शेर ॥ हैं किताबें ज्ञान की सब जाल का विस्तार है ।

छोड़ इन को वेद मानो ये रचित करतार है ॥

बस न कोई मुल्क की विद्या न कोई गुलार है ।

जो न माने वेद को शैतान वो मक्कार है ॥

कहैं विलायत प्रभुदयाल की सच्ची बात सुनाई है ।

कोई न पहुंचा फन्दसें इनके जाली मत ईसाई है॥२६॥

* इति *